

سُورَةُ نُوحٍ

Surah 71 — Nooh (Noah) · Meccan · 28 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ ^۱ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ^۲

हमने नूह को उसकी क़ौम के पास (पैग़म्बर बनाकर) भेजा कि क़बल उसके कि उनकी क़ौम पर दर्दनाक अज़ाब आए उनको उससे डराओ

2

قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ ^۳ مُّبِينٌ

तो नूह (अपनी क़ौम से) कहने लगे ऐ मेरी क़ौम मैं तो तुम्हें साफ़ साफ़ डराता (और समझाता) हूँ

3

أَنْ أَعْبُدُوا ^۴ اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا

कि तुम लोग खुदा की इबादत करो और उसी से डरो और मेरी इताअत करो

4

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ ^۵ مُّسَمًّى ^۶ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ^۷ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

खुदा तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें (मौत के) मुक़रर वक़्त तक बाक़ी रखेगा, बेशक जब खुदा का मुक़रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो पीछे हटाया नहीं जा सकता अगर तुम समझते होते

5

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لِينُ ^۸ وَنَهَارًا ^۹

(जब लोगों ने न माना तो) अर्ज़ की परवरदिगार मैं अपनी क़ौम को (ईमान की तरफ) बुलाता रहा

6

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ^{۱०}

लेकिन वह मेरे बुलाने से और ज्यादा गुरेज़ ही करते रहे

7

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا ۞ أَصْبَعَهُمْ فِيْٓءَاذَانِهِمْ وَأَسْتَغْشَوْا ۞ ثِيَابَهُمْ
وَأَصْرُوا ۞ وَأَسْتَكْبَرُوا ۞ أَسْتَكْبَرُوا ۞

और मैंने जब उनको बुलाया कि (ये तौबा करें और) तू उन्हें माफ़ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियां दे लीं और मुझसे छिपने को कपड़े ओढ़ लिए और अड़ गए और बहुत शिद्दत से अकड़ बैठे

8

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۞

फिर मैंने उनको बिल एलान बुलाया फिर उनको ज़ाहिर ब ज़ाहिर समझाया

9

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۞

और उनकी पोशीदा भी फ़हमाईश की कि मैंने उनसे कहा

10

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا ۞ رَبَّكُمْ إِنَّهُ ۞ كَانَ غَفَّارًا ۞

अपने परवरदिगार से मग़फ़ेरत की दुआ माँगो बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है

11

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۞

(और) तुम पर आसमान से मूसलाधार पानी बरसाएगा

12

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ ۞ وَيَنْبِيْنَ وَيَجْعَلَ لَّكُمْ جَنَّاتٍ ۞ وَيَجْعَلَ لَّكُمْ أَنْهَارًا ۞

और माल और औलाद में तरक्की देगा, और तुम्हारे लिए बाग़ बनाएगा, और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा

13

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۞

तुम्हें क्या हो गया है कि तुम खुदा की अज़मत का ज़रा भी ख़याल नहीं करते

14

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا

हालॉकि उसी ने तुमको तरह तरह का पैदा किया

15

أَلَمْ تَرَوْا ۚ كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ ۚ طِبَاقًا ۚ

क्या तुमने गौर नहीं किया कि खुदा ने सात आसमान ऊपर तलें क्यों कर बनाए

16

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا ۚ وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۚ

और उसी ने उसमें चाँद को नूर बनाया और सूरज को रौशन चिराग बना दिया

17

وَاللَّهُ أَنۢذَرُۙ بَتَّكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۚ

और खुदा ही तुमको ज़मीन से पैदा किया

18

ثُمَّ يُعِيدُكُمُ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمۡ إِخْرَاجًا ۚ

फिर तुमको उसी में दोबारा ले जाएगा और (क़यामत में उसी से) निकाल कर खड़ा करेगा

19

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۚ

और खुदा ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया

20

لَتَسْلُكُوا ۚ مِنْهَا سُبُلًا ۚ فِجَاجًا ۚ

ताकि तुम उसके बड़े बड़े कुशादा रास्तों में चलो फिरो

21

قَالَ نُوحٌ ۚ رَبِّ إِنِّهٖمۡ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا ۚ مَن لَّمۡ يَزِدْهُ مَالُهُ ۚ وَوَلَدُهُ ۚ إِلَّا خَسَارًا ۚ

(फिर) नूह ने अर्ज की परवरदिगार इन लोगों ने मेरी नाफ़रमानी की उस शरूख के ताबेदार बन के जिसने उनके माल और औलाद में नुक़सान के सिवा फ़ायदा न पहुँचाया

وَمَكْرُوا۟ ۚ مَكْرٌۭ ۚ كُبَّارٌۭ ۙ

और उन्होंने (मेरे साथ) बड़ी मक्कारियाँ की

وَقَالُوا۟ ۙ لَا تَذَرُنَّ ءَالِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدَّۙ ۙ وَلَا سُوَءَآءَ ۙ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرَۙ ۙ

और (उलटे) कहने लगे कि आपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और न वद को और सुआ को और न यगूस और यऊक व नसर को छोड़ना

وَقَدْ أَضَلُّوا۟ ۙ كَثِيرٌۭ ۙ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَّآ۟ ۙ

और उन्होंने बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा और तू (उन) ज़ालिमों की गुमराही को और बढ़ा दे

مِمَّا خَطِيئَتُهُمْ أُغْرِقُوا۟ ۙ فَأَدْخِلُوا۟ ۙ نَارَ ۙ ۙ فَلَمْ يَجِدُوا۟ ۙ لَهُمْ مِّنْ دُونِ ٱللَّهِ أَنْصَارَۙ ۙ

(आखिर) वह अपने गुनाहों की बदौलत (पहले तो) डुबाए गए फिर जहन्नुम में झोंके गए तो उन लोगों ने खुदा के सिवा किसी को अपना मददगार न पाया

وَقَالَ نُوحٌۭ ۙ رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى ٱلْأَرْضِ مِنَ ٱلْكَافِرِينَ دَيَّارًاۙ

और नूह ने अर्ज की परवरदिगार (इन) काफ़िरों में रूए ज़मीन पर किसी को बसा हुआ न रहने दे

إِنَّكَ إِن تَذَرُهُمْ يُضِلُّوا۟ ۙ عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا۟ ۙ إِلَّا فَاجِرًاۙ ۙ كَفَّارًاۙ ۙ

क्योंकि अगर तू उनको छोड़ देगा तो ये (फिर) तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उनकी औलाद भी गुनाहगार और कट्टी काफिर ही होगी

رَبِّ اٰغْفِرْ لِيْ وَلِوَلَدِيْ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيْ مُؤْمِنًاۙ ۙ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلِلْمُؤْمِنٰتِ وَلَا تَزِدِ
ٱلظَّالِمِيْنَ إِلَّا تَبَارَۙ ۙ

परवरदिगार मुझको और मेरे माँ बाप को और जो मोमिन मेरे घर में आए उनको और तमाम ईमानदार मर्दों और मोमिन औरतों को बरूश दे और (इन) ज़ालिमों की बस तबाही को और ज्यादा कर

